महामहिम राज्यपाल श्री राम नरेश यादव का "कन्सर्टेड सोलर पावर चैलेंज एण्ड ऑपारचुनिटी'' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में भाषण

स्थान:- भोपाल दिनांक 25 जनवरी, 2012 समय :- प्रात: 12.30 बजे

आज के इस संगोष्ठी में शामिल होते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है।

अक्षय ऊर्जा के क्षेत्र में भारत निरंतर प्रगतिशील है। आज देश की कुल विद्युत स्थापित क्षमता एक लाख 81 हजार मेगावॉट का केवल 11 प्रतिशत अक्षय ऊर्जा संयंत्रों से प्राप्त होता है। परन्तु क्षमता का यह प्रतिशत अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि जलवायु परिवर्तन जैसी विकट समस्या का समाधान केवल और केवल अक्षय ऊर्जा में निहित है।

आज जब संपूर्ण विश्व जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों से जूझ रहा है ऐसे समय में राजीव गांधी प्रौद्यागिकी विश्वविद्यालय की अक्षय ऊर्जा एवं हरित ऊर्जा के क्षेत्र के कार्य करने की कटिबद्धता सराहनीय कदम है।

हमने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कार्बन उत्सर्जन व ग्रीन हाउस गैसों के स्तर को कम करने की कटिबद्धता सदैव ही दिखाई है तथा इसके लिये ऊर्जा उत्पादन की उन्नत एवं हरित तकनीकों को निरंतर बढ़ावा दिया है। मेरी अपेक्षा है कि विश्वविद्यालय द्वारा भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के तत्वावधान में स्थापित कार्बन डाई ऑक्साईड सीक्वेस्ट्रेशन संयंत्र एवं अन्य अक्षय ऊर्जा उपकरणों पर शोध एवं शिक्षण कार्य स्वच्छ विकास प्रक्रिया को सही दिशा प्रदान करेगा ।

अक्षय ऊर्जा के क्षेत्र में अभी बहुत कार्य करने की आवश्कता है साथ ही ऊर्जा दक्षता को प्रोत्साहन देने के लिए वचनबद्धता की महती आवश्यकता है। जिससे

ऊर्जा निर्भरता के साथ हम विश्व व्यापी ग्लोबल वार्मिंग की विकट समस्या पर भी विजय प्राप्त करने में योगदान कर सकेंगे।

भारत सरकार ने इस दिशा में महत्वपूर्ण निर्णय लिए हैं जिससे अक्षय ऊर्जा का गांवों में प्रयोग से लेकर कोयले पर आधारित हमारे थर्मल पावन स्टेशन का प्रयोग सम्मिलित है।

मुझे आशा है कि इस क्षेत्र में रूचि रखने वाले सभी छात्रगण, अध्यापक एवं शोधकर्ता, जो अपने ज्ञान को विस्तारित करना चाहते हैं और साथ ही भागीदारी द्वारा अनुसंधान परियोजनाओं के कार्य करना चाहते हैं अथवा अधिक प्रत्यक्ष रूप से वृहद् औधोगिक परियोजनाओं से जुड़ना चाहते हैं, को विश्वविद्यालय के इन प्रयासों से लाभ मिलेगा।

जवाहरलाल नेहरू सोलार मिशन के अंतर्गत तेरहवीं पंचवर्षीय परियोजना के अन्त तक अर्थात वर्ष 2022 तक 22,000 मेगावॉट सोलार पर आधारित क्षमता स्थापित की जायेगी। देश की इस महात्वाकांक्षी एवं अत्यन्त महत्वपूर्ण मिशन की सफलता सोलर कन्सन्ट्रेटेड परियोजनाओं पर बहुत कुछ निर्भर है। मध्यप्रदेश में भी बड़वानी में सौर बहुल्य क्षेत्रों में सीएसपी (सोलार कन्सन्ट्रेटेड पावर) की संभावनाएं पायी गई हैं।

हर्ष का विषय है कि जापान के टोकियो इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी तथा उनके औद्योगिक पार्टनर टोयो इंजिनियरिंग कॉरपोरेशन के छह प्रोफेसर तथा विशेषज्ञ इस गोष्ठी में विस्तार से चर्चा करेंगे तथा प्रदेश में सौर ऊर्जा और विशेषत: सीएसपी संग्रहित सौर ऊर्जा की संभावनाओं एवं तकनीकों को एक मूर्तरूप देंगे।

मैं आशा करता हूं कि राजीव गांधी प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मध्यप्रदेश एवं टोक्यो इंस्टीट्यूट आफ टेक्नोलॉजी, जापान एवं उनके औद्योगिकी सहयोगी टोयो

इंजीनियरिंग कॉरपोरेशन, जापान सौर ऊर्जा के इन संयंत्रों को भारत में एवं विशेष रूप से मध्यप्रदेश में स्थापित करने के लिए उच्च क्षमता युक्त डिजाइंन तैयार करेंगे जिससे भारत सरकार के जवाहरलाल नेहरू सोलर मिशन की सफलता में अपना योगदान प्रदान करेंगे।

जय हिन्द।